सामाजिक समरसता और राष्ट्रप्रेम के प्रवक्ता डॉ0 राममनोहर लोहिया

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उ.प्र.)

जबकि आज पूरा देश संकट के मुहाने पर खड़ा है । अधिकतर राज्यों में माओवादी हिंसा के बीच आम लोग पिसने लगे हैं। ऐसे हालात में डॉ0 लोहिया जी और प्रासंगिक हैं । डॉ0 लोहिया का कथन मानेगें भी नहीं, मारेंगे भी नहीं पूरे नक्सली आन्दोलन को एक नई दिशा देता है। और नक्सली हिंसा छोड़कर लोकतान्त्रिक तरीके से वोट के जरिये सत्ता से टकराते तो दिल्ली की मन मनी पर भी थोड़ा अंकुश लगता है। नक्सलियों के समान सुरक्षा बलों के राणनीति के धकेल दिया है। लिहाजा नक्सली विचारधारा का विस्तार तो नहीं ही रूका ,उल्टा जवानों की जानें जाती रहीं। आज नक्सलवाद का जो विद्रूप चेहरा सामने आया है वो दरअसल सरकारों के फैसलों और कानूनों की वजह से ही हुआ है। डॉ0 लोहिया जी संभव सीमा तक विकेन्द्रीकरण की बात कहते थे, उनका मानना था कि फैसले लेने से लेकर नियम बनाने का अधिकार भी उन्हें ही मिलना चाहिए जिसके लिए नियम बनाए जाते हैं। जबकि बिल्कुल उलटा होता है लेकिन उसे बनाने वाले चंद रसूखदार होते हैं, जिनका दूर–दूर तक आम लोगों और सादगीपूर्ण जिंदगी से कोई लेना देना नहीं होता है। नक्सली आंदोलन में आज बड़ी संख्या में गुमराह हो रहे नौजवानों को डॉ0 लोहिया जी के विचारों से प्रेरणा लेने की जरूरत है। डॉ0 लोहिया मानव के संपूर्ण विकास की बात कहते हैं। लेकिन व्यक्तित्व के संपूर्ण कौशल का विकास नहीं है।

डॉ0 लोहिया ने भारत पाक विभाजन के सन्दर्भों का हल किया । यदि वह महासंघ के निर्माण के विषय में भी वास्तविक धरातल पर चिंतन करते तो यह स्पष्ट हो जाता कि महासंघ निर्माण की बातों का एक सपना था जिससे हम केवल सुन्दर सपना कह सकते हैं। हॉलाकि डॉ0 लोहिया ने सन् 1963 ई0 की परिस्थितियों में यह बात कही थी। सन् 1965 ई0 में पुनः युद्ध भड़का, घाव गहरा भी था और ताजा भी , इसलिए महासंघ की आवाज दब गयी, युद्ध की घोषणओं ने एक सुन्दर सपने के अस्तित्व को बिखेर दिया । हम यह नही कहते कि यह विचार उचित नही है किन्तु हमारी निश्चित धारणा है कि कोई भी महासंघ यदि आधारशिला पर टिका हो तब उसका निर्माण दोनो देशों के लिए और अधिक दुखदायी होगा। आवश्यकता इस बाात की है कि दोनों देशों की जनता अपने शासकों से विवेकपूर्ण कार्य करते रहने तथा सदभावपूर्ण व्यवहार करते रहने के लिए सदैव अपने प्रभाव का प्रयोग करे।

भारत में पिछले कई सालों से गठबंधन सरकारें चल रही हैं–जो भारतीय राजनीति को डॉ0 लोहिया का ही एक उपहार हैं। परिवर्तन की राजनीतिक का मकसद लेकर अलग–अलग विचारधाराओं वाली शक्तियों में मुद्दों के आधार पर एक कराकर देश में गठबंधन की नींव डॉ0 लोहिया जी ने ही डाली। अगर ऐसा नहीं होता तो आज के दौर में तो शायद सरकार भी नहीं बन पाती। जब डॉ0 लोहिया जी ने गठबंधन की बात शुरू की थी तो बड़े से बड़े

समाजवादियों ने भी उनकी बात पर एतबार नहीं किया था। लेकिन उनकी बात तक सही साबित हुई जब सन् 1997 ई0 के चुनावों के बाद अलग–अलग राज्यों गैर–कांग्रेसी सरकारों का गठन हुआ। तब से लेकर आज तक देश के ज्यादातर राज्यों में सन् 1996 ई0 से लेकर अब तक केन्द्र में गठबधंन सरकारें ही चल रही हैं।

आज देश जिन समस्याओं से जूझ रहा है उनमें सबसे बडी समस्या भ्रष्टाचार की है। दिन ब दिन बढ़ते भ्रष्टाचार के मामले और इस दिशा में लगातार होते नैतिक ह्रास ने देश की रफ्तार रोक दी है। महंगाई अंधाधुंध बढ़ रही है। स्कूल कालेजों की फीस आसमान पर चढ़ गई है, खाने से लेकर पहनने तक हजारो रूपये खर्च करने पड़ते हैं। गरीबों के पास चूंकि पैसा नहीं है उन्हें खाने कपडा नहीं मिलता डॉ0 लोहिया सार्वजनिक जीवन जिस आदर्श की मिसाल देते थे। आज उसकी सबसे ज्यादा जरूरत है। वे कहते थे कि सत्ता के प्रतिकार समस्याओं के निदान दोनों की जरूरत त्वरित होती है। यानि योजना बनाकर तुरंत अमल करने से ही समस्या का छुटकारा मिल सकता है केवल योजना बनाने भर से नहीं। सरकार की लोक लुभावन नीतियां करोड़ों खर्च करके जारी किये गये विज्ञापनों की शक्लों में मुंह चिढ़ाती रहती हैं। लेकिन आम लोगों की समस्यायें दिन पर दिन बढती जाती हैं।

आज हमारी खेती और अर्थव्यवस्था दोनों संकट के मुहाने पर खडी हैं। एक तरफ जहां गतिशील अर्थव्यवस्था के गगनचुंबी नारों के शोर में दबती जा रही और खेती से महंगाई आसमान छूने लगी है। किसान आत्महत्या कर कर रहे हैं। वहीं केन्द्र सरकार इस खतरे को भांपकर भी आंख मूंदे पड़ी है। खाने की थाली आम आदमी से रोज–रोज दूर होती जा रही है लेकिन मौजूदा व्यवस्था अपनी पीठ खुद थपथपाने में लगी है। डॉ0 लोहिया ने तब ही कांग्रेस सरकारों के उस भ्रामक प्रचार का पर्दाफाश किया था जब पंडित नेहरू और शास्त्री जी देश के लोगो को गमले और छज्जे में खेती करने की सलाह दे रहे थे। उन्होंने साफ कहा कि ये केवल देश के लोगों के गुमराह करने का रास्ता है..... क्योंकि अगर देश के करोड़ों लोगों को खिलाना है तो खेती जमीन में होगी न कि गमलों में , ...। ये तब का समय इस देश में बेकार पड़ी थी । अर्थशास्त्र तकनीक, खाद्य उत्पादन की गहरी समझ रखने वाले भी डॉ लोहिया आजीवन किसनों के हितों के लिए संघर्षशील रहें। उन्होंने साफ कहा कि अर्थव्यवस्था तभी मजबूत हुई और न ही देश की अर्थव्यवस्था। सन् 1967 ई0 में जब डॉ0 लोहिया जिंदगी और मौत से जूझ रहे थे तब भी वे यही कह रहे थे कि चौधरी चरण सिंह किसानों का कर्जा माफ नहीं करेगा। देश में संघर्ष की ऐसी समानता का कोई दूसरा उदाहरण बड़ी संख्या में आज भी युवाओं को प्रेरित करता है।

डॉ0 लोहिया सामाजिक समरसता और राष्ट्रप्रेम के ऐसे प्रचारक थे जो समाज में व्याप्त रूढियों को तोड़ने के लिए आजीवन संघर्षरत रहे। डॉ0 लोहिया के संघर्षो का कई बार व्यापक असर पडता था। डॉ0 लोहिया ने अगर अमेरिका के एक रेस्टोरेंट में अश्वेत लोगों के प्रवेश के लिए लड़ाई नहीं लड़ी होती तो शायद आज दुनिया के सबसे ताकतवर मुल्क का राष्ट्रपति एक अश्वेत नहीं होता। यही नहीं डॉ0 लोहिया पर्यावरण के भी सच्चे हितैषी थे। डॉ0 लोहिया का निर्णय आने वाले कल की परिस्थितियों के हिसाब से होता था । डॉ0 लोहिया जी अकेले ऐसे राजनेता थे जो उत्पादन से लेकर बाजार तक धर्म से लेकर धर्मनिरपेक्षता तक ,सत्ता से लेकर सिविल नाफरमानी तक , और क्षेत्रीय भाषाओं से लेकर अंग्रेजी हटाओ तक जैसे मुददों को लेकर सक्रिय थे।

वर्तमाान परिप्रेक्ष्य की यदि बात करे तो डॉ0 लोहिया में जो विश्वदृष्टि थी आज

उनके अनुयायियों में उसका अभाव ही दिखता है। राजनीति व समाज में जाति–धर्म जैसी संकीर्ण मनोवृत्ति दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। डॉ0 लोहिया का जुझारूपन उनके अनुयायियों में कुछेक को छोड़कर नहीं दिखाई पड़ता। सामाजिक अन्याय का प्रतिकार तभी किया जा सकता है। जब शोषितों, वंचितों तथा महिलाओं का उनका अधिकार लिया जाय। वैश्वीकरण और उदारीकरण के दौर में निर्धन और निर्धन तथा अमीर होते जा रहे है, कुछ मुठ्ठीभर लोग ही अधिकतम संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और पूँजीवादी देश छोटे–छोटे या गरीब देशों को अपना गुलाम बनाते जा रहे हैं। गलाकाट प्रतियोगिता में प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन हो रहा है। संपोषणीय विकास की अवधारणा को ताक पर रख दिया गया है। विकास का चाहे पूँजीवादी मॉडल हो या समाजवादी माडल सिर्फ अंध औद्योगिकीकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है। सम्पूर्ण आजादी,समता,सम्पन्नता,अन्याय के विरुद्ध जेहाद और समाजवाद की वो फिजा नहीं है क्योंकि लोहिया जी भी अब नहीं हैं,लेकिन दूसरों के लिए जीने वाले कभी मरा नही करते। लोहिया आज भी विचारों में जीवित हैं। लगन,ओजस्विता और उग्रता प्रखरता को जब तक गुण माना जाता रहेगा तबतक लोहिया अमर रहेंगे।

डॉ0 लोहिया मूलतः राजनीतिक,विचारक,चिंतक और स्वप्नद्रष्टा थे,लेकिन डॉ0 लोहिया का चिन्तन राजनीति तक ही कभी सीमित नहीं रहा। व्यापक दृष्टिकोण,उनकी दूरदर्शिता,उनकी चिन्तन–धारा की विशेषता थी। राजनीति के साथ–साथ संस्कृति,दर्शन साहित्य,इतिहास भाषा आदि के बारे में भी उनके विचार मौलिक थे। डॉ0 लोहिया की चिन्तन धारा कभी देशकाल की सीमा की बन्दी नहीं रहीं। विश्व की रचना और विकास के बारे में उनकी अनोखी और अद्वितीय दृष्टि थी। इसलिए उन्होंने सदा ही विश्व नागरिकता का सपना देखा था। उनकी चाह थी कि एक दूसरे देश में आने–जाने के लिए किसी तरह की भी कानूनी रूकावट न हो और सम्पूर्ण पृथ्वी के किसी भी अंश को अपना मानकर कोई भी आ–जा सकने के लिए पूरी तरह आजाद हो। डॉ0 लोहिया एक नयी सभ्यता और संस्कृति के द्रष्टा और निर्माता थे। इसे विडम्बना ही कहा जाएगा सा सुखद आश्चर्य कि आधुनिक युग जहाँ उनके दर्शन की उपेक्षा नहीं कर सका,वहीं उन्हें पूरी तरह आत्मसात भी नहीं कर सका। अपनी प्रखरता,ओजस्विता,मौलिकता,विस्तार और व्यापक गुणों के कारण वे अधिकांशतः लोगों की पकड़ से बाहर रहे। इसका एक कारण है–जो लोग डॉ0 लोहिया के विचारों को ऊपरी सतही ढंग से ग्रहण करना चाहते हैं,उनके लिए डॉ0 लोहिया बहुत भारी पड़ते हैं। गहरी दृष्टि से ही डॉ0 लोहिया के विचारों,कथनों और कर्मों के भीतर के उस सूत्र को पकड़ा जा सकता है,जो सूत्र डॉ0 लोहिया के विचारों की विशेषता है,वही सूत्र तो उनकी विचार–पद्धति हैं। दुनिया के सभी क्षेत्रों की परम्पराओं द्वारा प्राप्त स्थल–कालबद्ध अर्द्धसत्यों को सम्पूर्ण बनाने की दृष्टि से संशोधन की चेष्टा डॉ0 लोहिया के जीवन भर साधना रही है । आज दुनिया की दो–तिहाई आबादी का दर्द और गरीबी व विपन्नता को जड़ से मिटाने और समस्त विश्व को युद्ध और विनाश की बीमारी से मुक्त करने का निदान डॉ0 लोहिया ने बताया था। साथ ही डॉ0 लोहिया यह भी जानते थे कि निदान सही होने पर भी संसार में फैला स्वार्थ और लोभ उसे मंजूर न करेगा। डॉ0 राम मनोहर लोहिया इतिहास भी हैं और मिथक भी । वे राजनीतिज्ञ भी है और धर्मगुरु भी। वे दार्शनिक भी हैं और राजनीतिक कार्यकर्त्ता भी। सचमुच आज के समाजवादी नेताओं को देखकर यकीन नहीं होता कि उनके आंदोलन में कभी इतनी विलक्षण प्रतिभा रही होगी। इसे समाजवाद की पराकाष्ठा ही कहा जायेगा कि डॉ0 लोहिया अपने पीछे न कोई सम्पत्ति और न बैंक बैलेन्स छोड़

गये। आज डॉ0 लोहिया के विचारों पर दृष्टि डालना न सिर्फ प्रासंगिक है बल्कि अपरिहार्य भी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- पाठक नरेन्द्र–कर्पूरी ठाकुर और समाजवाद–मेधा बुक्स–एक्स–11 नवीन शाहदरा दिल्ली–110032,प्र सं.2008
- दीक्षित ताराचन्द–डा0 राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन–लोकभारती प्रकाशन महात्मा गाधी मार्ग,इलाहाबाद–211001,पहला पेपरबैक्स संस्करण–2013
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–डा0 लोहिया : इतिहास–चक्र (*Wheel of History*), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,संस्करण :1992
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, ,इलाहाबाद, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- भाटिया पी.आर.–भारतीय राजनीतिक विचारक, यूनिवर्सल बुक डिपो आगरा (उ. प्र)
- कुमार आनन्द, कुमार, मनोज – तिब्बत, हिमालय, भारत, चीन और डॉ0 राम मनोहर लोहिया – अनामिका प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण–2013
- पाल डॉ0 ओमनाग–प्रमुख राजनीतिक विचारक एवं विचारधाराएँ, कमल प्रकाशन ,इंदौर (म.प्र.)
- मंत्री गणेश–मार्क्स, गाँधी और समसामयिक संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–राममनोहर लोहिया–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- सिंह डॉ0 नामवर द्वारा मार्च 2010 को नई दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी में दिये गये वक्तव्य पर आधारित
- त्रिपाठी अरविन्द–स्त्री मुक्ति : लोहिया की आवाज कथा क्रम, अप्रैल–जून 2011
- शरद ओंकार (संपादक)–समता और संपन्नता (डॉ0 राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण :1996
- कपूर मस्तराम–डॉ0 राममनोहर लोहिया, वर्तमान संदर्भ में, अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2009

Copyright © 2015, Dr. Virendra Singh Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.